बिहार पुराविद् परिषद् द्वारा प्रकाशित 'आचार्य किशोर कुणाल अभिनन्दन–ग्रन्थ' के लोकार्पण के अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द का संबोधन

दिनांक–18.01.2017, समय–पूर्वाह्न 11:00 बजे, स्थान–राजभवन सभाकक्ष)

बिहार पुराविद् परिषद् के अध्यक्ष डॉ॰ चितरंजन प्रसाद जी, महासचिव डॉ॰ उमेशचन्द्र द्विवेदी जी, संरक्षकद्वय डॉ॰ युवराज देव प्रसाद जी एवं श्री रवि रंजन सहाय जी, अभिनन्दन–ग्रन्थ के सम्पादक डॉ॰ रामेश्वर प्रसाद जी, आज के कार्यक्रम के मुख्य केन्द्र–विन्दु आचार्य किशोर कुणाल जी, उपस्थित विद्वत्जन, देवियों एवं सज्जनों !!

इस कार्यक्रम–आयोजन के लिए जब मुझे बिहार पुराविद् परिषद् का अनुरोध–पत्र मिला, और साथ ही यह सूचना दी गई कि आप कार्यक्रम राजभवन में ही आयोजित करना चाहते हैं, तो मुझे निर्णय लेने में कुछ अधिक नहीं सोचना पड़ा। एक पंथ दो काज सिद्ध हो रहे थे। एक ओर तो सरस्वती के वरद्–पुत्र और उत्तर भारत में धर्म के वास्तविक मर्म को समझने–समझाने वाले आचार्य किशोर कुणाल जी के अनुपम व्यक्तित्व–कृतित्व पर आधारित 'अभिनन्दन–ग्रन्थ' के लोकार्पण का सौभाग्य मुझे मिल रहा था और दूसरी ओर इस पुनीत कार्य में राजभवन को सहभागिता का भी सहज सुअवसर प्राप्त हो रहा था। अतः मैंने इस कार्यक्रम के आयोजन हेतु तुरंत अपनी सहमति दे दी।

आचार्य किशोर कुणाल जी ने भारतीय पुलिस सेवा में एक कर्त्तव्यनिष्ठ और ईमानदार अधिकारी के रूप में पहले अपनी पहचान बनाई। पुलिस पदाधिकारी के रूप में समाज–सेवा और अपराध–नियंत्रण का गुरूतर दायित्व निभाने के क्रम में, इन्हें महसूस हुआ कि राष्ट्र और समाज उनसे और भी अधिक की अपेक्षा रखता है। इन्होंने आई॰पी॰एस॰ से त्याग–पत्र देकर, समाज–सेवा और धर्म–विमुख हो रही मानवीय संस्कृति

को सदाचार, नैतिकता और कर्मशीलता के पथ पर सतत् अग्रसर होने की प्रेरणा दी। आचार्य किशोर कुणाल जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित आज लोकार्पित हुए ''अभिनन्दन ग्रन्थ'' में उनके बहुआयामी और लोकस्पर्शी व्यक्तित्व और चरित्र पर आधारित विभिन्न आलेख शामिल किए गये हैं, जिनसे उनके जीवन–दर्शन का सही मूल्यांकन संभव हो पाया है।

बिहार में राज्यपाल के रूप में कार्य–दायित्व सँभालने के बाद, मैं जिन कुछेक व्यक्तियों की सामाजिक गतिविधियों से काफी प्रभावित रहा हूँ, उनमें आचार्य किशोर कुणाल जी भी शामिल हैं। किशोर जी 'यथानाम तथागुण' मुझे लगते हैं। एक किशोर बालक में जितना सहज, सरल, तेजस्वी, ऊर्जावान और निर्मल मन होता है, आचार्य किशोर कुणाल जी इस उम्र में भी उतने ही तेजस्वी और ऊर्जावान लगते हैं। इनके हृदय की उदारता, निष्कपटता और साधुता सराहनीय है। 'रामचरितमानस' में गोस्वामी तुलसीदास जी ने यह बताया है कि प्रभु की कृपा किन पर बरसती है। या फिर प्रभु किन्हें ज्यादा प्रेमपूर्वक अपनाते हैं। वे श्रीरामचन्द्र जी के मुख से कहलाते हुए लिखते हैं–

''निर्मल मन जन ते मोहि पावा

मोहि कपट छल–छिद्र दुरावा।''

एक दूसरी जगह लिखते हैं–

''जौं अनीति कछु भाषौं भाई

तौ मोहि बरजहुँ भय बिसराई।''

–आचार्य किशोर कुणाल जी ने तुलसी की लेखनी से निकले इस सद–वचन को अपने जीवन में हृदयंगम कर लिया है। फलस्वरूप, प्रभु श्री राम की महती कृपा इनपर बराबर बनी रहती है। इनकी विशाल–हृदयता, उदारता और निष्कपटता सभी को प्रभावित करती है।

आचार्य किशोर कुणाल जी ने केवल शास्त्रों का अध्ययन मात्र नहीं किया है, वरन उनके आदर्शों और विचारों को अपने जीवन में उतारा भी है। किसी भी धर्म के किसी भी ग्रंथ में कुछ भी अमानवीय या अनैतिक नहीं लिखा हुआ है। वेद, पुराण, उपनिषद, निगम, आगम और हरेक धर्मों के प्रमुख ग्रन्थ, मानव–मानव के बीच प्रेम का ही संदेश देते हैं। परोपकार पुण्य है और दूसरे को पीड़ा पहुँचाना और दूसरे का शोषण करना पाप है, अधर्म है –सभी ग्रन्थों में यही कहा गया है। हमारा 'भारतीय संविधान', जो हमारे आधुनिक भारत का सबसे बड़ा मर्यादा–ग्रन्थ है, उसकी 'प्रस्तावना' में भी कहा गया है कि ''हम भारत के लोग भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व–सम्पन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त करने के लिए तथा उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर, इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।''

–अर्थात् हमारा भारतीय संविधान भी हमारी मानवीय और लोकतांत्रिक आस्था का अनुपम सारभूत रूप है। भारतीय संविधान की 'प्रस्तावना' में शामिल 'धर्मनिरपेक्षता' शब्द का अर्थ भी धर्मविमुखता नहीं है। हमारी 'धर्मनिरपेक्षता' हमें सर्वधर्म समभाव और समादर की सीख देती है। आचार्य किशोर कुणाल जी भारतीय वाङ्मय, भारतीय दर्शन और भारतीय संस्कृति के एक मनीषी विद्वान होने के साथ–साथ, व्यावहारिक जीवन के भी कुशल निरूपक आचार्य हैं। किशोर कुणाल जी एक ऐसे धर्म की महत्ता प्रतिपादित करते हैं, जिसमें सामाजिक समता, समरसता, शांति और सबके हितों की समान रूप से रक्षा का भाव सन्निहित है।

वे बराबर अभिवंचित वर्गों के उत्थान के लिए सजग–सचेष्ट रहनेवाले इंसान हैं। आचार्य जी ने मुझे अपनी एक पुस्तक भेंट की थी –''दलित देवो भव।'' इस पुस्तक में समाज के अभिवंचित वर्ग के प्रति इनकी हार्दिक संवेदना ही नहीं, बल्कि अशेष आस्था और विश्वास की झलक मिलती है। हनुमान मंदिर, पटना के मुख्य पुजारी के रूप में फलाहारी बाबा की नियुक्ति आचार्य जी की इसी आस्था को प्रतीकित करने वाला एक साहसिक और सराहनीय निर्णय था। 'राज्य धार्मिक न्यास बोर्ड' के अध्यक्ष के रूप में भी इनके प्रगतिशील और व्यावहारिक निर्णयों ने इस पद की गरिमा को बढ़ाया।

कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा के कुलपति पद पर रहते हुए संस्कृत भाषा और साहित्य के विकास के लिए इनकी कृत सेवाएँ एक 'माइल–स्टोन' बनीं। 'मुन्डेश्वरी मंदिर' की ऐतिहासिक विरासत को सबके सामने लाने में इनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। 'दी ओल्डेस्ट रिकॉर्डेड टेम्पल' इनकी एक शोधपूर्ण रचना है। 'अयोध्या रिविजिटेड' इनकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक है, जिसमें 'अयोध्या–प्रसंग' के समस्त पहलुओं पर शोधपूर्ण और ऐतिहासिक तथ्यों की प्रस्तुति की गई है। 'बुद्धचरित्र' पर भी इनकी रचना सारगर्भित है।

आचार्य किशोर कुणाल जी केसरिया के नजदीक 'विराट रामायण मंदिर' के निर्माण को लेकर विशेष रूप से प्रयत्नशील हैं। विश्व–प्रसिद्ध इस भव्य और दिव्य ऐतिहासिक मंदिर के निर्माण का इनका सपना, ईश्वरीय कृपा और जन–सहयोग से अवश्य पूरा होगा, ऐसा मुझे विश्वास है।

मैं किशोर कुणाल जी के सारस्वत प्रयत्नों और धार्मिक व सामाजिक विकास के कार्यों की शतशः शुभाशंसा करता हूँ तथा उनके सुदीर्घ जीवन की मंगलकामना करता हूँ–

''जीवेम शरदः शतम्,

पश्येम शरदः शतम्,

श्रृणुयाम शरदः शतम्।''

'बिहार पुराविद् परिषद्' ने किशोर कुणाल जी पर 'अभिनन्दन–ग्रन्थ' प्रकाशित कर एक प्रशंसनीय कार्य किया है। मैं एतदर्थ सम्पादक एवं परिषद् के सभी अधिकारियों को साधुवाद देता हूँ। एक बार पुनः आप सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

***

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।